चुहिया रानी

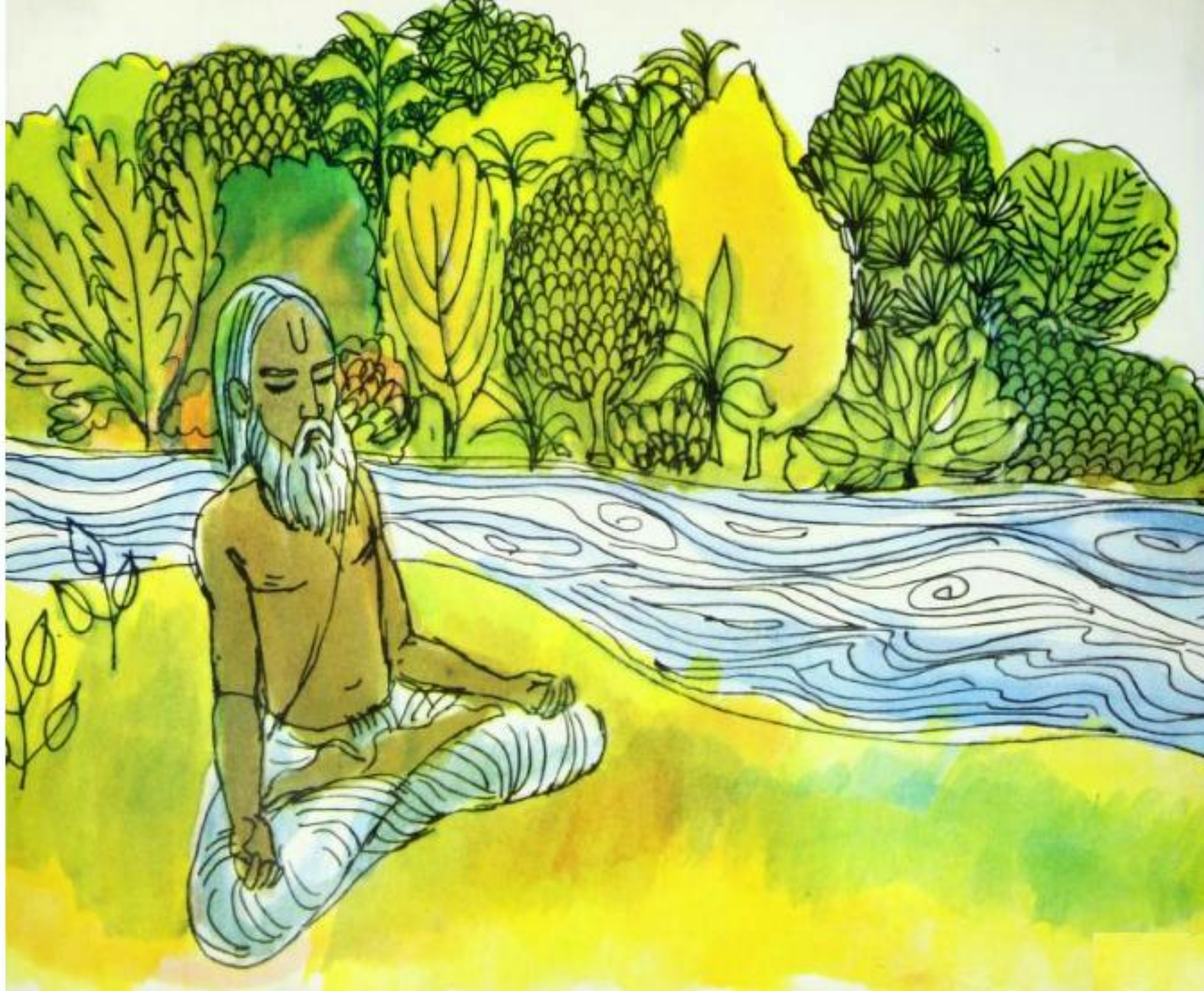


मेहली गोभाई

चुहिया रानी



चुहिया
रानी



भारत में एक हजार साल पहले, याज्ञवल्क्य नाम के एक बहुत बूढ़े ऋषि रहती थे.
वो और उनकी पत्नी एक शांत, घने जंगल में रहते थे जहाँ से पवित्र गंगा नदी बहती थी. एक दिन, भोर में, वो प्रार्थना करने के लिए नदी के तट पर गए.





तब एक पक्षी के रोने की आवाज़ ने उनकी प्रार्थना में विघ्न डाला. उन्होंने देखा कि गुस्से में एक बाज़ उनके ऊपर चक्कर लगा रहा था. फिर कुछ नरम और गर्म चीज़ उनके हाथ में आकर गिरी. बाज ने अपना शिकार गिरा दिया था.






ऋषि ने धीरे से अपना हाथ खोला. उनकी हथेली में एक छोटी सी चुहिया थी. चुहिया का छोटा, मुलायम शरीर डर से थर-थर काँप रहा था.

बूढ़े ऋषि ने बड़ी सावधानी से भयभीत चुहिया को एक बरगद के पत्ते पर रखा. फिर उन्होंने अपनी प्रार्थना पूरी की. उसके बाद उन्होंने अपनी जादुई शक्ति का उपयोग करके उस छोटी चुहिया को एक सुंदर बच्ची में बदल डाला.





फिर वो उस छोटी बच्ची को अपनी पत्नी के पास घर ले गए. "इसे स्वीकार करो, प्यारी पत्नी," उन्होंने कहा. "वो देवताओं का एक उपहार है."

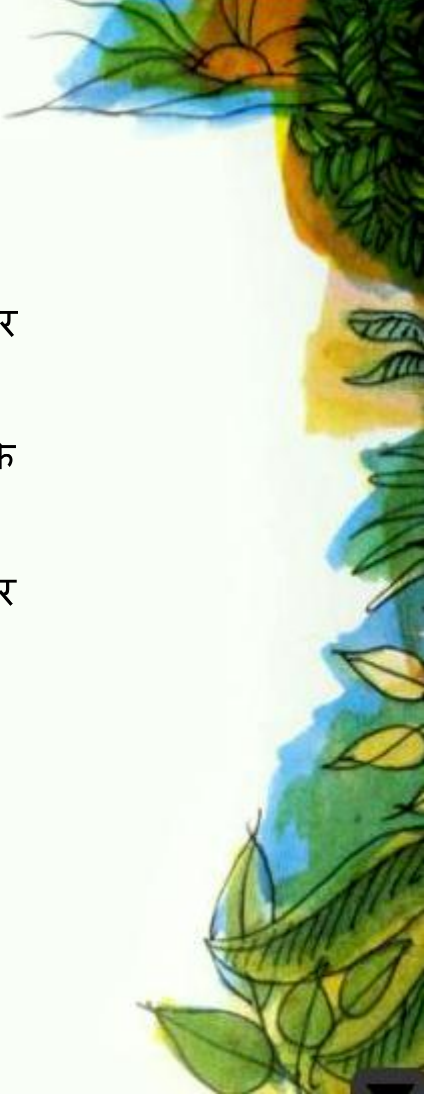
पत्नी ने छोटी बच्ची को अपनी बाहों में लिया. पत्नी की ज़िंदगी खुशी से भर गई. अब, अंत में उसकी गोद में खुद की एक बच्ची थी. उसे अपनी सभी प्रार्थनाओं का फल मिला था.



उन्होंने भोर में मिली छोटी लड़की का नाम उषा रखा और उसे अपनी सगी बेटी की तरह ही प्यार किया.

साल ख़ुशी से बीतने लगे और जल्द ही उषा एक युवती के रूप में खिल उठी.

जब वो जंगल में चलती, तब जानवर उसकी सुंदरता और कृपा से मंत्रमुग्ध होकर उसके साथ-साथ चलते थे.





एक दिन सुबह को पत्नी ने कहा.

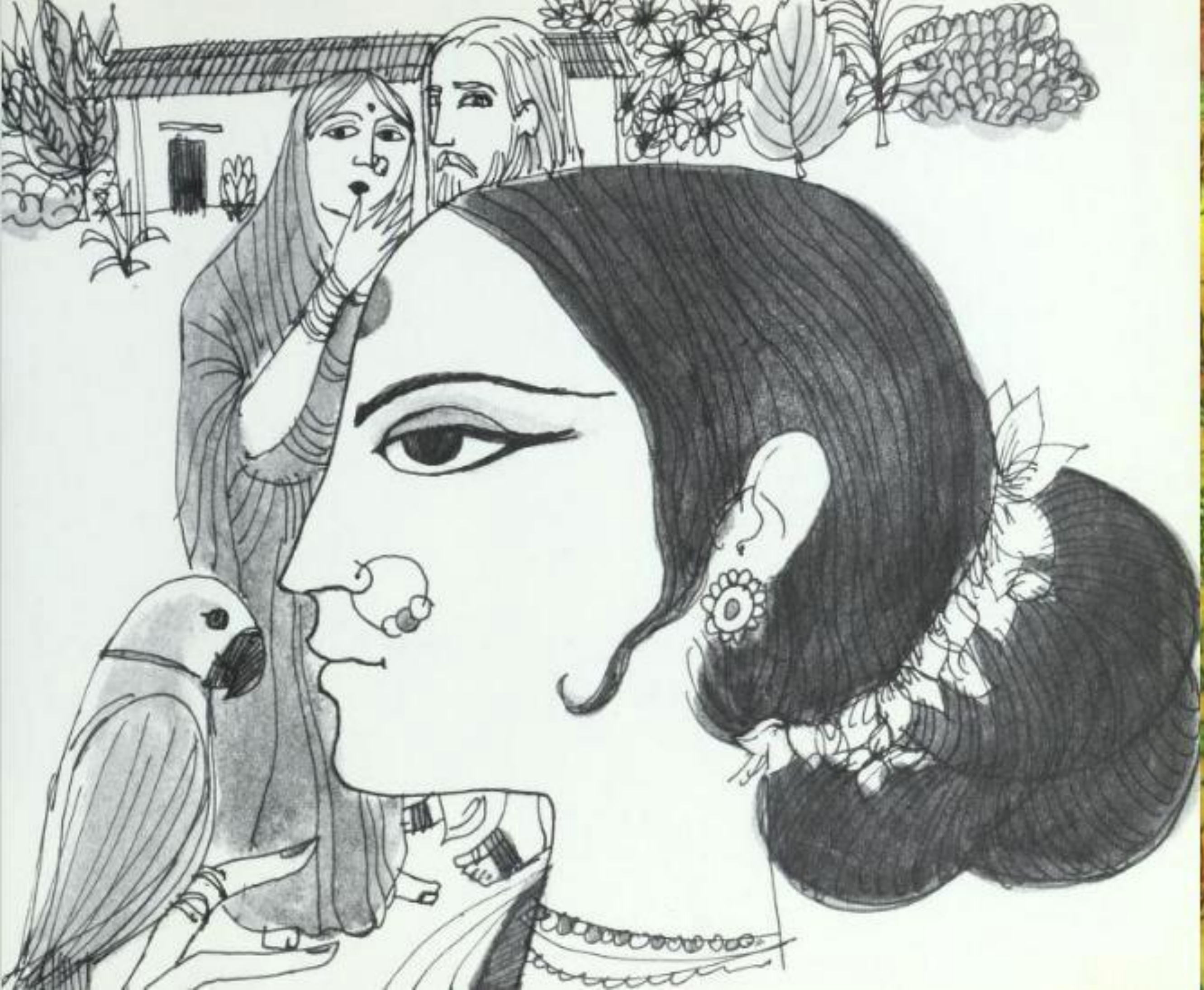
"मुझे लगता है कि अब हमारी बेटी के लिए

पति खोजने का समय आ गया है."

"उसका पति सभी पतियों में सबसे शानदार होगा,"

बूढ़े ऋषि ने कहा.

"मैं सूर्य के साथ उसकी शादी करूंगा!"







फिर उन्होंने एक दिन सूर्य को बुलाया. सूर्य देव अपने स्वर्ण वैभव में धधकते हुए, जंगल की पत्तियों को झुलसाते हुए और नीचे की घास जलाते हुए आए.

लेकिन उन्हें देखकर जवान लड़की रोने लगी.

"मैं उन्हें देख भी नहीं सकती," उसने पिता से कहा. "उनका चेहरा बहुत चकाचौंध और गर्म है."

तब पत्नी ने कहा, "बेटी फ़िक्र मत करो. तुम्हारे पिता तुम्हारे लिए सूर्य से भी अच्छा पति खोजेंगे."

"हे सूर्य, क्या तुमसे भी कोई बड़ा है?" बूढ़े ऋषि ने पूछा.

सूर्य ने उत्तर दिया, "बादल मुझ से अधिक बलवान है, क्योंकि वह मुझे ढँक सकता है और मेरा प्रकाश छीन सकता है."



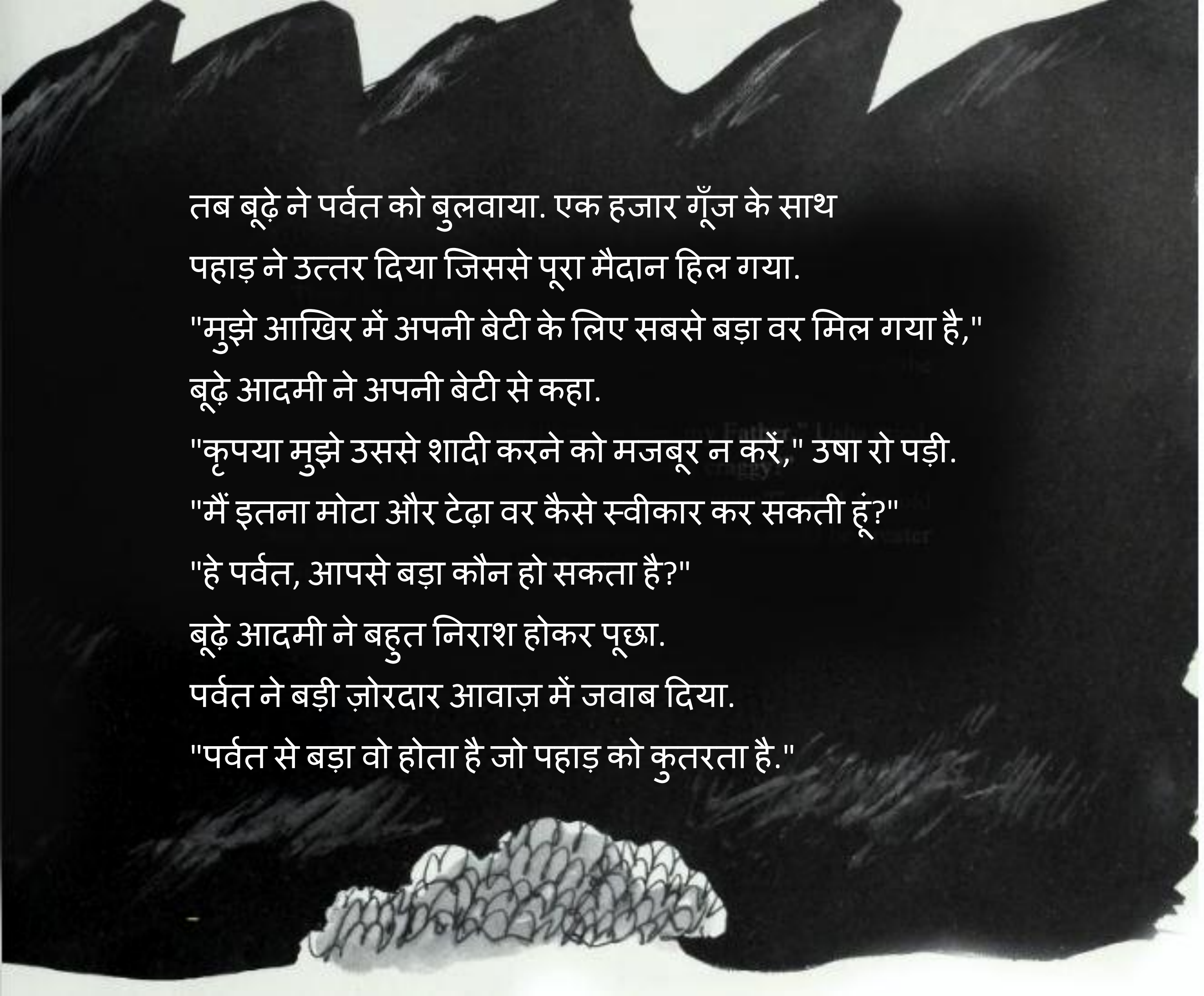


तब बूढ़े ऋषि ने बादल को बुलाया.
बादल भगवान अंधेरे आकाश में उतरे, पर उन्हें देखकर जंगल के सारे जानवर पहले ही भाग गए.
"क्या तुम अपने पति के लिए बादल को स्वीकार करोगी?" बूढ़े ऋषि ने अपनी बेटी से पूछा.
"नहीं, पिताजी," उषा ने कहा. "वो बहुत सांवला है और मुझे उससे डर लगता है."
"क्या तुमसे भी कोई बड़ा है, बादल?" बूढ़े ऋषि ने पूछा.
"हवा!" बादल ने जवाब दिया, "वो अपने एक ज़ोरदार झोंके से मुझे अपनी मर्जी के मुताबिक कहीं भी फेंक सकता है."



फिर बूढ़े आदमी ने हवा को बुलाया. पवन देव महान जंगल में घूमते हुए आए. यहां तक कि सबसे ऊंचे और मजबूत पेड़ भी उनको झुककर प्रणाम करने लगे.
"वो बहुत शैतान और ऊधमी है!" उषा रो पड़ी.
"हे पवन, तुमसे बड़ा कौन है?" बूढ़े ऋषि ने पूछा.
"पर्वत," पवन ने जवाब दिया, "क्योंकि वो रास्ते में खड़ा होकर अकेले ही मेरे रास्ता रोक सकता है."



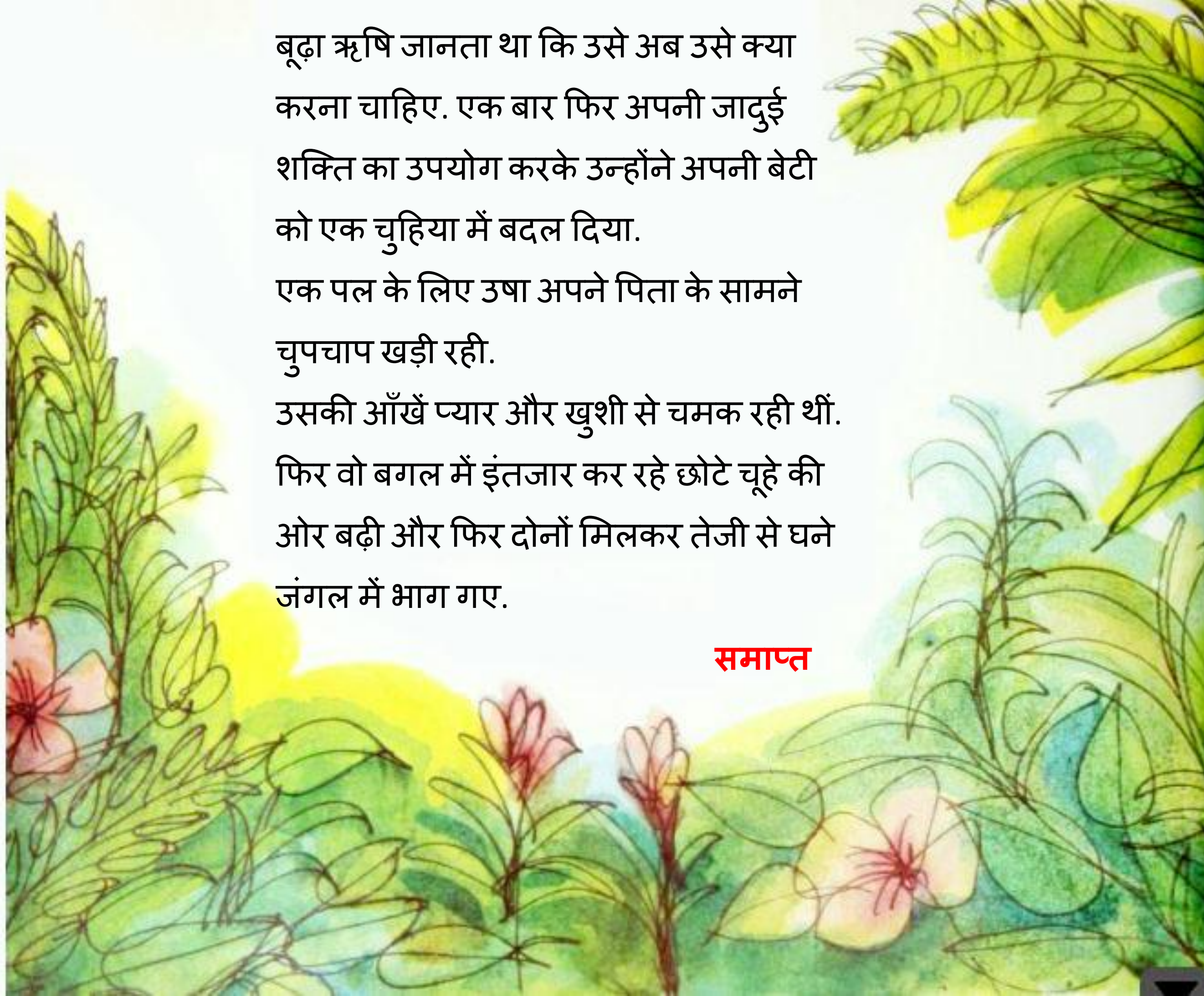
तब बूढ़े ने पर्वत को बुलवाया. एक हजार गूँज के साथ
पहाड़ ने उत्तर दिया जिससे पूरा मैदान हिल गया.
"मुझे आखिर में अपनी बेटी के लिए सबसे बड़ा वर मिल गया है,"
बूढ़े आदमी ने अपनी बेटी से कहा.
"कृपया मुझे उससे शादी करने को मजबूर न करें," उषा रो पड़ी.
"मैं इतना मोटा और टेढ़ा वर कैसे स्वीकार कर सकती हूं?"
"हे पर्वत, आपसे बड़ा कौन हो सकता है?"
बूढ़े आदमी ने बहुत निराश होकर पूछा.
पर्वत ने बड़ी ज़ोरदार आवाज़ में जवाब दिया.
"पर्वत से बड़ा वो होता है जो पहाड़ को कुतरता है."

बस फिर एक नन्हा चूहा, घने जंगल से बाहर निकलकर आया.
वो सीधे उषा के पास गया और उसके चरणों में जाकर बैठ गया.
उसका चमकदार कोट नरम सोने जैसा था, और उसकी चिकनी
नाक आकाश की तरह गुलाबी थी.






उस खूबसूरत जीव को देखते ही, उषा रोमांच से भर गई,
और उसके दिल में छोटे चूहे के लिए प्यार भर गया.
वह अपने घुटनों पर गिर गई और रो पड़ी.
"प्रिय पिता, कृपया मुझे एक चुहिया में बदल दें.
मैं वास्तव में केवल तभी खुश रहूंगी
जब मैं उससे शादी कर सकूंगी,
और किसी दूसरे से नहीं."



बूढ़ा ऋषि जानता था कि उसे अब उसे क्या करना चाहिए. एक बार फिर अपनी जादुई शक्ति का उपयोग करके उन्होंने अपनी बेटी को एक चुहिया में बदल दिया.
एक पल के लिए उषा अपने पिता के सामने चुपचाप खड़ी रही.
उसकी आँखें प्यार और खुशी से चमक रही थीं.
फिर वो बगल में इंतजार कर रहे छोटे चूहे की ओर बढ़ी और फिर दोनों मिलकर तेजी से घने जंगल में भाग गए.

समाप्त



कहानी के बारे में

"चुहिया रानी" कहानी शायद भारत में कई हजार साल पहले पहली बार सुनाई गई थी. लगभग 200 ई.पू. उसे भारतीय शास्त्रीय भाषा संस्कृत में लिखा गया था. यह कहानी पंचतंत्र (जिसका अर्थ है "पाँच पुस्तकें") का एक हिस्सा है, जिसमें चौरासी "नीति" या नैतिक कथाएँ हैं. पंचतंत्र मूल रूप से एक समझदार, विवेकशील व्यक्ति द्वारा लिखी गई होगी. वो एक बुद्धिमान राजा के तीन मूर्ख बेटों को शिक्षित करने की कोशिश कर रहा था. पंचतंत्र के अंग्रेजी और जर्मन-भाषा संस्करण पंद्रहवीं शताब्दी में मुद्रित होने वाली पहली पुस्तकों में से थे.

लेखक के बारे में

मेहली गोभाई बॉम्बे, भारत के मूल निवासी हैं. उन्होंने अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में बी.ए. किया और फिर लंदन के रॉयल कॉलेज ऑफ़ आर्ट में जाने से पहले वहाँ लॉ स्कूल में पढ़ाई की. श्री गोभाई ने एक प्रमुख विज्ञापन फर्म के बॉम्बे, लंदन और न्यूयॉर्क कार्यालयों में एक कला निर्देशक के रूप में काम किया. अब वह न्यूयॉर्क-सिटी के एक अपार्टमेंट में रहते हैं. उनके साथ एक अंग्रेजी बुलडॉग और दो बिल्लियां भी रहती हैं. वो पेंटिंग और लेखन के बीच अपने समय को विभाजित करते हैं.